بسم الله الرحمن الرحيم

# जुम्मा खुतुबा

## विषय:-

## “ आर्थिक बलिदान (भाग 1)”


हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)


30 March 2018 (11 Rajab 1439 AH)


अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों , ( और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **" आर्थिक बलिदान (भाग 1)"**

मैंने आज के विषय में अल्लाह (स व त) के रास्ते में आर्थिक योगदान पर अभिव्यक्त करना चुना है। यह जानकर बहुत दुख होता है कि इस तथ्य के बावजूद कि जमात उल साहिह अल इस्लाम दुनिया के कई देशों में आधिकारिक रूप से स्थापित और पंजीकृत है, फिर भी इन देशों में कई सदस्य अल्लाह (स व त ) के रास्ते में आर्थिक बलिदान नहीं कर रहे हैं। इस क्षेत्र में कोई प्रगति नहीं है और बहुत कम सदस्य जमात उल साहिह अल इस्लाम में आर्थिक रूप से अल्लाह के कार्य के लिए योगदान दे रहें है।

यह बहुत दुख की बात है कि इस वक्त के खलीफातुल्लाह को पहचानने और स्वीकार करने के बावजूद और जमात उल साहिह अल इस्लाम को एकीकृत करने बाद , फिर भी कोई आर्थिक योगदान से संबंधित वास्तविक प्रयास नहीं है। इस स्थिति को देखकर मैंने यह निर्णय लिया है की मेरा उपदेश आज इस विषय पर ध्यान केंद्रित करना है।

यह याद रखना चाहिए कि अल्लाह सभी जरूरतों से स्वतंत्र है लेकिन हम हमारी जरूरतों के लिए उस पर निर्भर हैं। ऐसे हजारों तरीके हैं जिनके द्वारा अल्लाह ज़रूरत की चीज़ों को प्रदान करता है।ज़रूरत और अल्लाह के रास्ते में योगदान करने के मूल्य को पवित्र कुरान में कई बार दोहराया गया है। ऐसा करके लोग पवित्र और शुद्ध हो जायेंगें। यह एक ऐसा साधन है, जिससे भक्त धार्मिकता की ओर बढ़ता है, सुधार हो जाता है और कई हानिकारक तरीकों को छोड़ देता है, ऐसे तरीके जो उसे किसी भी मोक्ष में नहीं ले जायेंगें।

**मैं आर्थिक बलिदान के तत्वज्ञान की व्याख्या करना चाहता हूं। अल्लाह पवित्र कुरान में कहता है:**

**तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन ख़र्च करो और अपने-आपको विनाश में न डालो तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।** (अल-बकरा २ : १९६ )।

यह आपके लाभ के लिए है,अन्यथा आप हारे हुए में होंगे। इस मामले में मुझे काफी अनुभव है और इसके गैर पालन के व्यक्तिगत नुकसान को कई प्रकार से उठाना पड़ेगा। पवित्र कुरान ज़कात के भुगतान को आर्थिक बलिदान से जोड़ता है।

पवित्र कुरान के अनुसार एक राष्ट्र के आर्थिक सुधार के लिए अल्लाह के रास्ते में लोगों का योगदान देना सबसे अच्छा समाधान है। उनकी हालत में हमेशा सुधार होता रहता है। हमारा समुदाय (जमात उल साहिह अल इस्लाम) इस प्रकार उन देशों में जहां अत्यधिक गरीबी है वहाँ सुधार लाएगा।

मैंने आप सभी से कई अपीलें की हैं, की प्रत्येक व्यक्ति अपने या अपने साधनों के अनुसार अल्लाह के कार्य में मदद करे और आपके योगदान के ज़रिये गरीब देशों को मदद मिलेगी, (अल्लाह (के लिए ) कभी भी किसी को उनके साधन से ऊपर पल्ला झुकाने को नहीं कहता)। केवल अल्लाह (स व त) इन गरीब देशों की आर्थिक स्थिति को बदल सकता है और दुनिया के बाकी हिस्सों में और वहाँ भी सुरक्षित रूप से स्थापित करने में हमारी मदद कर सकता है ।

पवित्र कुरान, अपने ज्ञान में, यह सिखाता है कि अल्लाह के कार्य में जो आर्थिक बलिदान करते हैं उसे अल्लाह प्रचुर मात्रा में धन का आशीर्वाद देता हैं। पवित्र पैगंबर (स अ व स) के समय के दौरान मुसलमान गरीबी में रहते थे और यहां तक कि वह और उनकी पत्नियां अक्सर इस तथ्य के बावजूद कि वे सम्मानित मक्का के परिवारों में से थे उन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ा था। केवल कुछ ही मुसलमानों के पास धन था। वास्तव में, अमीर वे थे जिसने पवित्र पैगंबर (स अ व स) के दिव्य संदेश को स्वीकार किया और अभ्यास किया, जिसे पवित्र पैगम्बर (स अ व स) ने मानव जाति को बताया।

मक्का से मदीना की ओर पलायन के बाद भी वे लगभग उसी स्थिति में रहे। वे कठिनाई के साथ निर्वाह करते रहे। बाद में, कुछ वर्षों के बाद, अल्लाह ने उनके घर को बहुत धन से भर दिया और आपको ऐसा कोई इतिहास में अद्भुत बदलाव नहीं मिलेगा। यह की मस्जितों को सोने से सजाना इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार नहीं है । फिर वह समय आया, जब मुस्लिम शासक और सरकारों के पास इतनी संपत्ति थी कि वे नहीं जानते थे कि गरीबों की मदद करने, विश्वविद्यालयों के निर्माण और अर्थव्यवस्था में सुधार करने के कई तरीकों के बाद भी इसका क्या करना है । सारा धन अल्लाह के पास है जो आत्मनिर्भर है। यह हम है जिसे जरूरत है।

इस्लाम के शुरुआती दिनों में अरब में केवल कुछ अमीर लोग थे, इसलिए बहुमत के आर्थिक बलिदान केवल छोटे-छोटे प्रस्ताव थे। बाद में, अल्लाह ने मुसलमानों के पास इतना धन दिया कि बगदाद (ईराक में) दुनिया का सबसे अमीर शहर था। मैंने इस एक उदाहरण का उल्लेख किया है जो यह दर्शाता है कि अल्लाह के रास्ते में बलिदान करके, समृद्धि और सफलता का अनुसरण होता है। अगर धार्मिक राष्ट्र अल्लाह के रास्ते में आर्थिक बलिदान करने में असफल रहे, तो उन्हें गरीबी से दंडित किया जायेगा। हालाँकि, अगर, वे इस मामले में सबसे आगे रहते हैं (यानी अल्लाह का कार्य में उदारता से योगदान करते हैं) तब ईश्वर उन पर धन और समृद्धि प्रदान करता है। हमें इस रहस्य की प्रभावकारिता को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए और ताकि इसे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था बनाने के व्यवहार में लाया जा सके।

**पवित्र कुरान सिखाता है कि किसी के साथ यह सोच कर की हमें बदले में एहसान प्राप्त होगा, एहसाननहीं करना चाहिए (अल-बकरा २ : २६५ )।**

अल्लाह के लिए हमारा बलिदान एक विनम्र उपहार है। अगर अल्लाह इसे स्वीकार करता है तो वो हमारा सौभाग्य और इनाम होगा। यह

उन लोगों का कर्तव्य है जो राष्ट्र के बलिदान की भावना को बढ़ाता है और राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को प्रोत्साहित करता हैं। आर्थिक बलिदान एक उपाय है जिसे अतीत में विशेष रूप से पवित्र पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) के समय में आजमाया गया और परीक्षण किया गया है और फिर बाद में अल्लाह ने इस भूमि को इतना आशीर्वाद दिया कि यह अरबों के तेल का एक स्रोत बन गया। यह उनके पहले बलिदानों के माध्यम से था कि यह सब हुआ।

यह अल्लाह के सभी सच्चे धर्मों के नियमों में से एक है (अतीत में और इस्लाम के उदय के साथ) जो अल्लाह (स व त) की सेवा में अपने धन को त्यागता हैं वो असामान्य धन उनके पास आता हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि कुछ गरीब देशों के सबसे गरीब क्षेत्रों में भी आर्थिक बलिदान करने की भावना मौजूद है और अल्लाह के कार्य के लिए इस तरह की अपील का उत्तरदायी होना। अगर हमारे जमात के सभी सदस्य अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दें तो मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूं की गरीब देशों की तक़दीर, हमारी जमात और उनकी अपनी परिस्थिति अच्छे के लिए बदलाव लाएगी। इंशा अल्लाह। यहाँ उनके सभी आर्थिक और अन्य समस्याओं का समाधान निहित है। लोगों को अल्लाह सर्वशक्तिमान के रास्ते पर दान करना सीखना चाहिए। यह गरीबी और सभी प्रकार की  कठिनाइयों और समस्याओं पर काबू पाने का उपाय है ।

आज के लिए मैं अपने प्रवचन को यहीं रोक देता हूं और मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे अगले शुक्रवार को मेरे उपदेश का यही विषय जारी रखने की तौफीक दे। इंशा अल्लाह।

अल्लाह आप सभी को आर्थिक बलिदान के महत्व को समझने में मदद करे। याद रखें, कि अल्लाह के रास्ते में देने से आप गरीब नहीं होंगे यदि आप अमीर या गरीब हैं, अगर आप गरीब हैं या मध्यम वर्ग के राजस्व वाले हैं। इसके विपरीत, जब आप अल्लाह के रास्ते में योगदान करते हैं, आप केवल अपने जीवन को पक्का करने के लिए अपना मार्ग तीर्व सुरक्षा, शांति, विश्वास, अल्लाह पर भरोसा प्रशस्त कर रहे हैं और आख़िरकार अल्लाह के दया के ख़ज़ाने को खोलते है और जब आप कम से कम इसकी उम्मीद करते हैं तब धन आपको दिया जाएगा।

अल्लाह पवित्र कुरान में कहता है:

**जो अल्लाह की राह में अपना धन दान करते हैं, उस (दान) की दशा उस एक दाने जैसी है, जिसने सात बालियाँ उगायी हों। (उसकी) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है तथा अल्लाह विशाल[1] , ज्ञानी है।**

1. अर्थात उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है।। **(अल-बकरा २ : २६२ )।**

**तो अल्लाह से डरते रहो, जितना तुमसे हो सके तथा सुनो, आज्ञा पालन करो और दान करो। ये उत्तम है तुम्हारे लिए और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से, तो वही सफल होने वाले हैं।। (अत-तग़ाबुन (६४ : १७ )।**

अल्लाह अपने रास्ते में आर्थिक बलिदानों के लिए आपकी चेतना जागृत करे,

दुनिया भर में जमात उल साहिह अल इस्लाम की प्रगति और उन सभी लोगों की मदद करें ,

याद रखें, जो आप सभी की तुलना में गरीब हैं।

**आमीन।**